शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसंबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कबीर : व्यक्तित्व और युग

सुनीता देवी
एम.ए. हिन्दी (नेट)
शासकीय महिला कॉलेज
फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी के सर्वाधिक क्रांतिकारी और फक्कड़ कवि, निर्गुण ब्रह्म के महान उद्घोषक, कर्म-काण्ड एवं अंधविश्वासों के विरोधी, प्रखर समाज सुधारक कबीरदास भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवियों में अग्रगण्य है। जिस समय इस समाज सुधारक का इस संसार में आविर्भाव हुआ उस समय चारों तरफ राजनैतिक वातावरण दूषित हो चुका था, समाज पतनोन्मुख के स्तर पर पहुंच चुका था। सन्त कवि कबीरदास ऐसे सशक्त कवि है जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडम्बरों पर कुठाराघात करते रहे। कबीरदास को वास्तव में सच्चे प्रेमी का अनुभव था। उन्होंने जन साधारण को समाज में व्याप्त बुराइयों से अवगत करवाया। प्रस्तुत शोध पत्र में कबीरदास के व्यक्तित्व और युगीन परिस्थितियों पर विचार किया गया है।

भूमिका

भक्तिकालीन सन्त कवियों में कबीरदास का स्थान सर्वोपरि है। वे एक सच्चे साधक, उच्च भक्त, समर्थ कवि और समर्पित समाज सुधारक हुए। कबीर की वाणी में जो प्रखरता, निर्भीकता तथा प्रभाव है वह अन्य कवियों की वाणी में नहीं है।

संत कबीर का व्यक्तित्व

कबीरदास के युग निर्धारण के लिए उनके जन्म व मृत्यु के बारे में जान लेना आवश्यक है। 'कबीर चरित्र बोध' में स्पष्ट रूप से कबीर का जन्मकाल 1455 वि.स. बताया गया है। नाभादास ने अपने सुपरिचित ग्रन्थ 'भक्तमाल' में कबीर के एक सौ बीस वर्ष लम्बे जीवन का वर्णन किया है। इसी प्रकार अनन्तदास ने अपने ग्रन्थ 'कबीर परिचयी' में कबीर का समय चौदहवीं शताब्दी के अन्त और पन्द्रहवी शताब्दी के आरम्भ में मानते हैं।

1. चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए जेठ सुदी वरसायत को, पूरनमासी तिथि प्रकट भए अन्तस्साक्ष्य की दृष्टि से देखा जाए तो उनके दो प्रमुख प्रसंग सामने आते हैं। प्रथम काजी द्वारा हाथी चलवाने और लोहे की जंजीरों से बंधवाकर गंगा में डुबोने का वर्णन हुआ है। झूठा रोजा, झूठी ईद जैसे वाक्यों से क्रुद्ध होकर बादशाह सिंकदर लोदी ने कबीर को गंगा में फिंकवा दिया, किन्तु कबीर किसी प्रकार बच गए।

गंग लहर मेरी टूटी जंजीर, मृगछाला पर बैठे कबीर कहे कबीर कोई संग न साथ, जल थल राखत है रघुनाथ। कबीर का दूसरा अन्तस्साक्ष्य है - उनके द्वारा जयदेव और नामदेव की महता का वर्णन करना गुरू परसादी जैदेव नामा
भगति के प्रेम इन्हहि जाना
इस कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कबीर नामदेव और जयदेव के परवर्ती थे। श्री

मोनियर विलियम्स के अनुसार जयदेव का स्थितिकाल ईसा सन् की बारहवीं शताब्दी है। एक जनश्रुति के अनुसार काशी में स्वामी रामानंद का एक भक्त ब्राह्मण था जिसकी किसी विधवा कन्या को स्वामी जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद भूल से दे दिया, जिसके फलस्वरूप उस विधवा की कोख से एक बालक ने जन्म लिया जिसे उसने लोकलाज के भय से लहरतारा नामक तालाब की सीढ़ियों पर छोड़कर चली गई। बाद में नीरू और नीमा नामक निःसन्तान जुलाहा दम्पति ने उनका पालन पोषण किया। यही बालक आगे चलकर कबीरदास हुए स्वयं कबीर ने कहा है -

काशी में हम प्रकट भये, रामानंद चेताये'।

कबीर ने गृहस्थ जीवन भी व्यतीत किया। उनकी पत्नी लोई थी। कमाल और कमाली दो उनके पुत्र-पुत्री हुए। कबीर की मृत्यु के समय से सम्बद्ध एक दोहा उद्धृत है -

'संवत पन्द्रह सौ पछत्तरा कियो महगर को गौन
माघ सुदी एकादशी मिलो पौन में पौन'।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार -'वे सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के समान निरीह, भेषधारी के आगे प्रचण्ड, दिल के साफ, दिमाग के दुरूस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वन्दनीय थे। युगावतार की शक्ति और विशवास लेकर वे पैदा हुए थे और युग प्रवर्तक की दृढ़ता उनमें विद्यमान थी इसलिए वे युग परिवर्तन कर सके'।

उस निर्गुण निराकार साधक के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता केवल अनुमान कर सकते है - 'ज्यों गूंगे मीठे फल को रस अन्तरगत ही भावै'।

कबीर युगीन परिस्थितियाँ

कबीरदास के आविर्भाव के समय समाज की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। समाज में फैले आडम्बर, रूढ़िवादी परम्परा, धार्मिक अव्यवस्था, कुरीतियों और कुप्रथाओं का बोलबाला था। उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग को हेय की दृष्टि से देखते। ऐसे समय कबीर जैसे क्रान्तिकारी कवि ने जनसाधारण तक अपना संदेश पहुँचाया। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने लिखा है - "सामाजिक शोषण, अनाचार, अन्याय के विरूद्ध कबीर का काव्य एक तीखा अस्त्र है, उन्होंने देश, धर्म, समाज, समस्त क्षेत्र में क्रान्ति की जो धारा बहाई उससे उस युग की कलुषता बह गयी।"

राजनीतिक परिस्थिति

कबीर का काल संक्राति का काल था। तत्कालीन राजनीतिक वातावरण पूर्ण रूप से विषाक्त हो चुका था। चारों तरफ घोर अराजकता, अन्तः कलह, राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई थी। हिन्दू, मुसलमानों के भीतर भी निरन्तर ईर्ष्या और द्वेष का बोलबाला था। लोदी वंश का सर्वाधिक यशस्वी सुल्तान सिकंदर शाह 1546 ई. में गद्दी पर बैठा। सिंकदर की घरेलू परिस्थिति एवं कट्टर मुसलमानों का कड़ा विरोध सहना पड़ा। दुहरे विरोध के कारण वह असहिष्णु हो गया। उसने अपने शासनकाल में हिन्दू धर्म को मानने वाले लोगों पर अनेक अत्याचार किए। सिकंदर शाह के तत्कालीन समाज में आन्तरिक संघर्षो एवं विविध धार्मिक मतभेदों के कारण, भारतीय संस्कृति की केन्द्रीय दृष्टि समाप्त प्रायः हो गयी थी। इसी शोषित समाज में महात्मा कबीर का जन्म हुआ। तत्कालीन शासनतन्त्र और धर्म तन्त्र को देखते हुए महात्मा कबीर ने जो कहा, इससे उसकी बगावत झलकती है -

दर की बात कहो दरवेसा बादशाह है कौन भेसा
कहाँ कूच कर हि मुकाया मैं तोहि पूछा मुसलमान।

इस तरह चारों तरफ राजनीतिक अराजकता और घोर अन्याय को देखकर उनका हृदय वेदना से द्रवित हो उठा। धार्मिक कट्टरता के मनमाने रूप से शासन तन्त्र चल रहा था जिसमें साधारण जनता का शोषण बुरी तरह से हो रहा था-

'काजी काज करहु तुम कैसा, घर-घर जब हकरा बहु बैन
बकरी मुरगी किंह फरमाया, किसके कहे तुम छुरी चलाया।

वैभव विलास में आसक्त होकर रहने वाले शासकों को कबीर ने नाना प्रकार से स्मरण कराने की चेष्टा कि उनका राजपाट, सिंहासन और सुन्दरियों के साथ विलासपूर्ण जीवन निरर्थक है -

राज पाट स्यंघासण आसण, बहु सुन्दरी रमणां
चन्दन चीर कपूर विराजत अति तऊ मरणां
"कब दत्तै मावासी तोरी, कब शुकदेव तोपची जोरी
कब नारद बंदूक चलाया, व्यासदेव कब बंब बजाया
करहिं लड़ाई मति के मंदा, ई हैं अतिथि कि तरकस बंदा

धर्म की आड़ में सब तरह के अनुचित कार्य व अत्याचार हो रहे थे। भोली भाली जनता के पास इस शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की शक्ति नहीं थी अगर कोई हिम्मत भी करता तो उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ता। कबीरदास ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई व हिन्दु, मुसलमान दोनों को फटकार लगाई -

दिन को रोजा राखत है, रात हनत है गाय
मोहिं खून वह बंदगी, क्यों खुशी होय खुदाय

कबीर के समय में शासकों की नादानी के चलते राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद और पुनः दौलताबाद से दिल्ली बदलने के कारण अपार धन, जन को हानि हुई और प्रजा तबाह हो गई। कबीर ने तत्कालीन शासकों पर जमकर प्रहार किये -

कबीर नौबत आपणी, दस दिन लेहु बजाये
ऐ पुर पट्टन ऐ गली, बहुरि न देखे आय

सामाजिक परिस्थिति

कबीर के युग में सामाजिक परिस्थितियाँ भी पतनोन्मुख थी। जन साधारण के जीवन की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। लोग मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, रोजा, नमाज, व्रत, तिलक लगाना आदि अंधविश्वासों में जकड़े हुए थे। अलग-अलग जातियों और उपजातियों के बीच रहन-सहन, आचार-प्रकार व धार्मिक अनुष्ठान में काफी अन्तर रहा। निम्न जाति के लोगों को मंदिरों में प्रवेश करने का भी अधिकार प्राप्त नहीं था। अपने को ऊँचा और दूसरों को निम्न जाति का मानने वाले लोगों से कबीर पूछते हैं -

जो तुम ब्रांभन बंभनी के जाए
तो आन बाट काहे न आए

इस समाज में लोगों को गलत बातें ठीक लगती हैं और अच्छी बातें विष। सच की आवाज उठाने का साहस किसी के पास न था -

नीम कीट जस नीम प्यारा
विष को अमृत कह गवारा

वे समाज के लोगों को पग-पग सावधान करते। चारों तरफ समाज में योगियों और संतों का भेष बनाकर चलने वाले साधुओं से जन साधारण को कहा कि बाह्य भेष बनाने से कोई भक्त नहीं होता-

साधु भया तो क्या हुआ, माला पहिरी चार
बाहर भेस बनाइया, भीतर भरी भँगार

सत्य से बढ़कर कोई दूसरा तप नहीं और झूठ के बढ़कर कोई पाप नहीं

सत बराबर तप नहीं, झूठ बराबर नहीं पाप
ताके हृदय साँच है, जाके हृदय आप

धार्मिक पाखंडो का खण्डन करते हुए कबीर कहते हैं कि भगवान न मंदिर न मस्जिद और न ही गिरिजा घर में है। वह प्रत्येक प्राणी में वास करता है -

माला फेरत जुग गया, फिरा न मनका फेर
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर

वे मूर्तिपूजा, तीर्थ यात्रा, तिलक लगाना, बाह्याडम्बरों के प्रति विरोधी हैं -

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजू पहार
तातै ये चाकी भली, पीसि खाय संसार
काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय

कबीर हिंसा का विरोध करते है -

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल
जे नर बकरी खात है, तिनको कौन हवाल

जिसके हृदय में प्रेम दया, करूणा, सहानुभूति है वही सबसे बड़ा पण्डित है।

पोथी पढ़ी-पढ़ी जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय

कबीर लोगों से कहते है कि ऐसा ऊंचा बनने का क्या लाभ जिससे किसी को कोई सुख नहीं मिलता -

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर
पंछी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर

वर्णाश्रम धर्म पर अवलंबित सामंती हिन्दू समाज के प्रति कबीर विद्रोही हो जाते हैं -

सन्तो, पाण्डे, निपुन कसाई
कहै कबीर सुनो हो संतो, कलि माँ ब्राह्मण खोटे
फूटी आंख विवेक की, लखै न संत असंत
जाके संग दस बीस है, ताको नाम महन्त"।

जन साधारण को समाज में होने वाले बाह्याडंबरों और साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले तत्वों से अवगत करवाया-

जंत्र मन्त्र सब झूठ है मत भरमो जग कोय
सार शब्द जाने बिना कागा हंस न होय

कबीरदास ने लोगों को अहिंसा का रास्ता अपनाना अपकारी का भी उपकार करना, प्रेमपूर्ण आचरण करना, अहंकार को त्यागने, दूसरों से सहानुभूति रखना आदि उपदेश दिए -

कबिरा सोई पीर है जो जानै पर पीर
जो पर पीर न जानइ सो काफिर बेपीर
मूंड मुंडाए हरि मिलें, सब कोई लेई मुडाय
बार-बार के मूंडे ते, भेड़ बैकुंठ न जाय
पूजा, सेवा, नेम, व्रत गुड़ियन का सा खेल
जब लग पिऊ परसे नहीं तब लग संसय मेल।

समाज में नारियों की दशा तो ओर भी दयनीय थी। उन्हें केवल विलासिता का साधन मात्र समझा जाता।

संत सती की प्रशंसा करते। उस समय समाज में पर्दा प्रथा, सतीप्रथा, बाल विवाह जैसी दूषित परम्पराओं का प्रचलन था। पति के मृत शरीर के साथ पत्नी के जल मरने की यह भीषण प्रथा हिन्दू जाति को विरासत में मिली।

धन्य धन्य वह नारी जो जरी पिया के नाल
सती विचारी सत किया, काठौ सेज बिछाई
ले सूती पिव आपणां चहुँ दिसि अगनि लगाई

महात्मा कबीर इसी पीड़ित समाज का एक अंग थे। पीड़ा ने उन्हें सचेत किया और दलितों की कराह ने उन्हें बल दिया -

चलती चक्की देख के, कबीरा दिया रोय
दो पाटन बीच में, साबूत बचा न कोय।

धार्मिक परिस्थिति

कबीर के समय में उत्तर भारत में नाना धर्म, मत, सम्प्रदाय का जंगल बना हुआ था। एक ओर

शाक्त मत, तन्त्र मार्ग, बज्रयान सहजयान आदि वामाचारपूर्ण बिगड़े रूप में चल रहे थे। मध्य युग में जगह-जगह विशेषकर काशी जैसे तीर्थ जगहों पर अलग-अलग सम्प्रदायों और वेशभूषा के कई योगी घूम रहे थे। भिक्षु, संन्यासी, नग्न संन्यासी, भक्त श्रद्धालु जनता को उपदेश देते जो लोगों को झूठे अंधविश्वासों में धकेलते। इन सन्तों में कुछ सच्चे थे तो कुछ खोटे भी।

कबीर कलि खोटी भई, मुनियर मिलै न कोई
लालच, लोभी, मसकरा, तिनकूं आदर होई

इनमें से कई मदिरा, अफीम, भाँग जैसे नशीले पदार्थो का सेवन करने वाले भी थे।

गाँजा अफीम पोस्त, भाँग और शराब पीवता
इक प्रेम रस चाखा नहीं, अमली हुआ सो क्या हुआ

लोगों में पाखंड, अंधविशवास फैले हुए थे। लोग बीमारी की हालत में विशेषकर निम्न वर्ग के लोग टोना टोटकों के चक्कर में फंसे रहते थे। इस काल में इस्लाम धर्म के आगमन से हिन्दू धर्म के लिए अस्तित्व का संकट पैदा हो गया। डा. भागीरथ यादव लिखते हैं, "इस्लाम धर्म नहीं स्वीकारने वाले हिन्दू को अनेक प्रकार की यातनाएँ दी जाती थीं - तलवार के घाट उतार देना, आरे से चीर देना, उबलते पानी में फेंक देना, शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देना, हाथी से रौंदवा देना, कोड़े से पीटना, सिर में लोहे की कील ठोकना, अपहरण करना, मंदिर व मूर्तियों का ध्वंस करना, मंदिर के पुजारियों का अपमान करना आदि आम बात हो चुकी थी।

कबीर के समय सिंकदर शाह का शासन था, जो अपनी धार्मिक कट्टरता के कारण प्रसिद्ध था। वी.डी. महाजन लिखते है - "सिंकदर एक अंधविष्वासी मुस्लिम था। उसने आदेष दिया कि मथुरा का मंदिर तोड़ दिया जाए व उसके स्थान पर मस्जिद बनवा दी जाए। हिन्दुओं को यमुना नदी के घाटों पर स्नान करना वर्जित कर दिया धर्म के ठेकेदारों ने पशुबलि, मद्यपान, माँस भक्षण और कामुकता से लोगों को ठगने तथा उन्हें पथ-भ्रष्ट करने का साधन बना लिया।

श्री नरेश कुमार शर्मा लिखते है, "ऐसी परिस्थितियों में कबीर ने धर्म को जन साधारण का रूप देने के लिए सहजता पर बल दिया। इसी सहजता के कारण कबीर का दर्शन भी सहज हो गया इनका अद्वैतवाद न योगियों, न मुसलमान और न हिन्दुओं से मिलता है। इसी वजह से कबीर ने दोनों धर्मों में व्याप्त विकृत तत्वों पर कड़ा प्रहार किया।

आर्थिक परिस्थितियाँ

डा. विमल महता लिखती है, "तत्कालीन समाज में एक ओर जहाँ तलवार की नोंक पर ऐश्वर्य, समृद्धि के खेल खेले जा रहे थे वही दूसरी ओर आर्थिक विषमता के कारण मनुष्य, मनुष्य का भक्षण करने को तैयार था। अधिकांश लोग बद से बदतर का जीवन जीने को मजबूर थे निम्न वर्ग उच्च वर्ग द्वारा करों की मार व लूट-पाट का शिकार बना रहता। उनका आर्थिक दृष्टि से भरपूर शोषण किया जाता -

निर्धन आदर कोई न देई, लाख जतन करै ओहू चित न धरइ
जो निर्धन सरधन कै जाइ आगै बैठा पीठ फिराई
जो सरधन निर्धन कै जाई दिया आदर लिया बुलाई

कबीर ने अपने चारों तरफ ऐसे लोभी सूदखोरों और महाजनों को देखा जो ब्याज पर पैसा उधार देते और दरिद्र लोगों को तंग करते -

कलि का स्वामी लोभिया, मनसा धरी बधाई
दैहि पईसा ब्याज कौ, लेखों करता जाई

उच्च वर्ग में सामन्त, जागीरदार, सुल्तान, उमरा, उच्च पदों पर आसीन अधिकारी व व्यापारी शामिल थे। इन्हें राज्य की ओर से जागीरें, वेतन व अन्य सुविधाएँ मिलती। गाँव में रहने वाले किसान, मजदूर छोटे-छोटे कारीगर थे जो अपनी मेहनत के बल पर अनाज, फल, सब्जी उगाते और उन्हें उनसे प्राप्त हुए धन में से कर के रूप में तय किया हिस्सा राजा या शासक को देना पड़ता। शोषणपूर्ण नीतियों के कारण किसान वर्ग का जीवन दयनीय दशा तक पहुँच चुका था। करों के अलावा भी खेती से उत्पन्न सभी वस्तुओं के हिस्से उपहार, नजराना आदि के रूप में स्थानीय सुल्तान की सेवा में पहुँचा देता और सुल्तान से सम्मान पाने की चेष्टा करता -

कलि का स्वामी लोभिया पीतलि धरी बटाइ
राज दुबारा यौ फिरै ज्यू हरिराई गाई

सुल्तान लोग समय-समय पर इच्छानुसार कर बढ़ाने में नहीं हिचकते। इस प्रकार दिनभर काम करने के बावजूद किसान-मजदूर दो जून की रोटी नहीं जुटा पाते। उन्हें अक्सर भूख से छटपटाते रहना पड़ता उनसे बेगार भी करवायी जाती उन्हें बार-बार सूदखोर महाजनों के सामने हाथ पसारना पड़ता और कर्ज न चुका पाने पर उन्हें बाल-बच्चों तक को भी बेचना पड़ता। साहूकारों द्वारा उन्हें बंधुआ मजदूर बना लेने की घटनाएँ आम थी।

कोई लरका बेचई लरकी बेचै कोई
सांझा करै कबीर ज्यों हरि संग बनज कोइ

कबीर ने उस समय भीख माँग कर जीने वाले योगी, सन्तो को शारीरिक श्रम से जीविकोपार्जन की शिक्षा दी। कबीर ने उतने ही धन से संतोष करने को कहा जिससे कुटुम्ब का निर्वाह हो जाय-

साई इतना दीजिए जामें कुटुँब समाय
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय

निष्कर्ष

निम्न वर्ग से संबंधित होने पर भी वे स्वाभिमान और आत्मविश्वास से सिर ऊँचा उठाकर समाज में जहाँ अन्याय, अत्याचार देखा उसके खिलाफ विद्रोही प्रवृति अपनाई। समाज में फैली अराजकता व मानवता के पतन की पीड़ा ही उनके काव्यगत विद्रोह का कारण है। आज कबीर साहब तो नहीं है, मगर उनका साहित्य अवश्य है, आज की राजनीतिक स्थिति में अपेक्षाकृत सुधार लाने के लिए कबीर साहित्य से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है। उनका साहित्य सहिष्णुता के भाव से इतना परिपूर्ण है कि वह हमारे लिए आज भी पथ प्रदर्शन का आकाशदीप बना हुआ है। आज भारतवर्ष में कबीर जैसे युग प्रवर्तक की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य पृष्ठ-279
2. कबीर एक पुनर्मूल्यांकन, डा. बलदेव वंषी पृष्ठ-95
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य राम चन्द्र शुक्ल पृष्ठ 63
4. कबीर की विचारधारा, डा. गोविंद त्रिगुणायत
5. कबीर कवि और युग एक पुनर्मूल्यांकन, डा. के श्रीलता पृष्ठ 85
6. कबीर एक पुनर्मूल्यांकन, डा. बलदेव वंशी पृष्ठ 216
7. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य, पृष्ठ 280
8. कबीर एक पुनर्मूल्यांकन डा. बलदेव वंशी पृष्ठ 126, 217, 124, 94
9. कबीर कवि और युग एक पुनर्मूल्यांकन, डा. के श्रीलता पृष्ठ, 111
10. कबीर एक पुनर्मूल्यांकन, डा. बलदेव वंशी पृष्ठ-95, 93, 94
11. कबीर कवि और युग एक पुनर्मूल्यांकन, डा. के श्रीलता, पृष्ठ 141, 142

12. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य, पृष्ठ 282

13. कबीर कवि और युग एक पुनर्मूल्यांकन, डा. के श्रीलता, पृष्ठ 105, 115

14. हिन्दी समय